# ढ़ीगरी मशरूम उत्पादन तकनीक

## पौष्टिक खाद्य, आजीविका सुरक्षा एवं रोजगार का एक बेहतरीन साधन

- मशरूम एन्टीऑक्सीडेन्ट, रेशों, प्रोटीन, विटामिन, कार्बोहाइड्रेट और खनिज लवणों का एक सर्वोत्तम स्त्रोत है।
- मशरूम की खेती के करना आसान है, इसके लिये खेत की आवश्यकता नहीं होती और इससे प्राप्त आय से ग्रामीण आजीविका को सुधार कर ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।
- मशरूम की खेती में कृषि से प्राप्त सह–उत्पाद जैसे भूसा आदि का उपयोग किया जाता है।
- इसकी खेती जलवायु से प्रभावित नहीं होती इसलिये पूरे साल इसकी खेती की जा सकती है।

**खेती:** इसकी खेती नियंत्रित तापमान एवं आर्द्रता की अवस्था में की जाती है।

**शुरूआती संवर्धन:** शुरुआती संवर्धन को परखनलियों में ऑटोक्लेव किये हुये पोटैटो डेक्ट्रोज अगार अथवा माल्ट एक्सट्रेक्ट अगार मिडियम को दो से तीन सप्ताह के लिये 25 डिग्री सेल्सियस पर ऊष्मायित्र में रख दिया जाता है।

**मास्टर संवर्धन:** यह उबाले हुये गेहूँ के दानों पर कांच की बोतलों में बनाया जाता है और इसका उपयोग व्यवसायिक संवर्धन को उपचारित करने के लिये किया जाता है।

**व्यवसायिक संवर्धन:** यह उबाले हुये गेहूँ के दानों पर पोलीप्रोपाइलिन के लिफाफों में बनाया जाता है।

**अर्थशास्त्र:** इसकी खेती की लागत 60 रुपये प्रति किलोग्राम से भी कम आती है जबकि ताजी मशरूम को 150 से 175 रुपये प्रति किलोग्राम के हिसाब से बेचा जा सकता है। इस प्रकार तीन महीनों के अन्दर लागत से दुगुनी आय प्राप्त की जा सकती है।


योगदान: **एस.के. सिंह**

**भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान**

जोधपुर 342 003 (भारत)

www.cazri.res.in



काजरी फैक्टशीट: 2021


CAZRI®

Enhancing resilience of arid lands